भजन

तर्ज– आधा है चन्द्रमा रात आधी

मेहर बड़ी है मेहरबान की,बुजरक है साहेबी
श्यामा श्याम की,मेरे साहेबान की

1– सूरत अमरद है नूरेजमाल की
छवि फबती है बेहद कमाल की
मीठी मीठी जुबां,करती इश्के ब्यां
नजरें रहमत भरी रहमान की

2– अंग आनंद हैं श्यामा महारानी
जिनकी सिफत ना जाये बखानी
इश्क हक से लेवें,फिर रूहों को देवें
क्योंकि रूहें हैं अंग सुभान की

3– नूरी सिनगार बरनूं मैं कैसे
लोक नासूती समझेंगे कैसे
ये तो आतम का धन,लेना करके चितवन
पाया उसने ही जिसने पहचान की